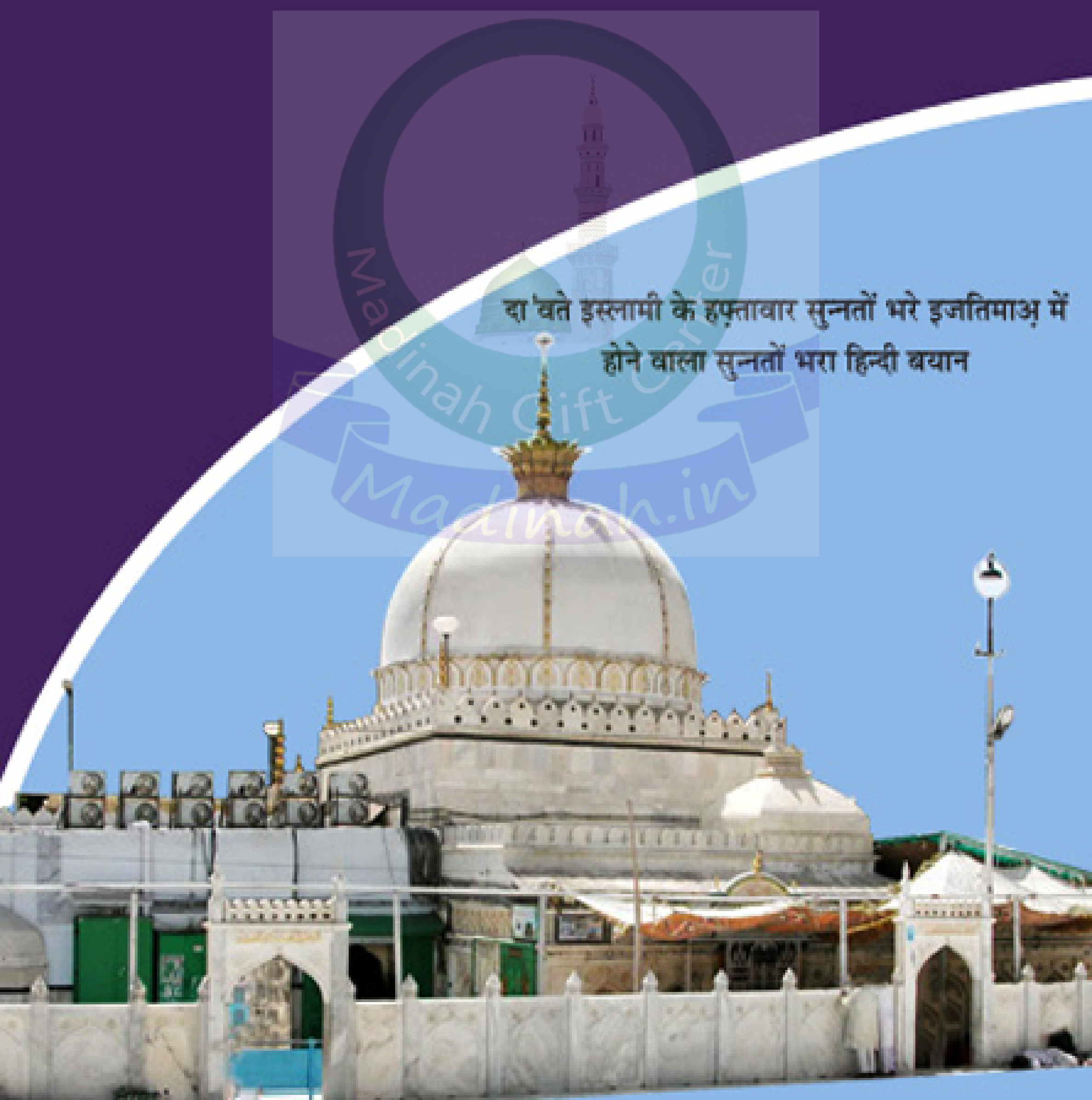
FAIZANE KHWAJA GHAREEB NAWAZ
(HINDI BAYAAN)

फ़ैज़ाने
ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه



اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

نَوَیْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِکَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाखि़ल हों, याद आने पर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब हा़सिल होता रहेगा और ज़िम्नन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे नूर बार है :

زَیِّنُوْا مَجَالِسَکُمْ بِالصَّلَاۃِ عَلَیَّ فَاِنَّ صَلَاتَکُمْ عَلَیَّ نُوْرٌ لَّکُمْ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ या'नी तुम अपनी मजलिसों को मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ कर आरास्ता करो, क्यूंकि तुम्हारा मुझ पर दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा।

(جامع صغیر، حرف الزای، ص۲۸۰، حدیث: ۴۵۸۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी किसी मह़फ़िले ज़िक्र में शिर्कत की सआ़दत नसीब हो और हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इस्मे गिरामी लिया जाए, तो हु़सूले बरकत के लिये दुरूदे पाक पढ़ लेना चाहिये, ताकि हमारा पढ़ा हुवा दुरूदे पाक रोज़े क़ियामत हमारे लिये नूर हो और हमारी बख़्शिश व मग़फ़िरत का ज़रीआ़ भी बन जाए।

फंस न जाऊं क़ियामत में मौला कहीं कोई हु़स्ने अ़मल पास मेरे नहीं
तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम ऐ शफ़ीए़ उमम लाज रखना तुम्हीं

(वसाइले बख़्शिश, स. 603)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(معجم کبیر، سہل بن سعد الساعدی...الخ، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

❁ निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा ❁ टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा। ❁ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा। ❁ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा। ❁ صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा। ❁ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान करने की निय्यतें

मैं भी निय्यत करता हूं ❁ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा। ❁ देख कर बयान करूंगा। ❁ पारह 14, सूरतुन्नह़्ल, आयत 125 : اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (ह़दीस 3461) में

वारिद इस फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَ لَوْ اٰيَةً या'नी "पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो" (بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ماذکر عن بنی اسرائیل، ۲/۴۶۲، حدیث: ۳۴۶۱) में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा। ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा। ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा। ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा। ۞ क़हक़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा। ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेह्न बनाने की ख़ात़िर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ाकिमे सब्ज़वार की तौबा

ईरान के शहर "सब्ज़वार" में एक निहायत ही सर सब्ज़ शादाब बाग़ था, जिस के बीचों बीच शफ़्फ़ाफ़ पानी की एक नहर जारी थी और वस्त़ में एक ख़ुशनुमा ह़ौज़ था। येह बाग़ ह़ाकिमे सब्ज़वार का था, जो बहुत ही ज़ाबिर और बद अत़वार शख़्स था। उस का मा'मूल था कि जब भी बाग़ में आता तो शराब पीता और नशे में ख़ूब शोरो ग़ुल मचाता। एक रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ सय्यिद मुईनुद्दीन ह़सन सन्जरी चिश्ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی का गुज़र वहां से हुवा, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने नहर से ग़ुस्ल किया और ह़ौज़ के कनारे नवाफ़िल अदा करने लगे। मुह़ाफ़िज़ों ने अपने ह़ाकिम की सख़्त गीरी का ह़ाल अ़र्ज़ किया और दरख़्वास्त की, कि यहां से तशरीफ़ ले जाएं, कहीं ह़ाकिम आप को कोई नुक़्सान न पहुंचा दे। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरा ह़ाफ़िज़ो नासिर (या'नी निगहबान व मददगार) है। इसी दौरान ह़ाकिमे सब्ज़वार बाग़ में दाख़िल हुवा और सीधा ह़ौज़ की

तरफ़ आया, अपनी ऐशो इशरत की जगह पर एक अजनबी दुरवेश को देखा तो आग बगूला हो गया, मगर इस से पहले कि वोह कुछ कहता, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने एक नज़र डाली और उस की काया पलट दी । हाकिम आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की नज़रे जलालत की ताब न ला सका और बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर पड़ा, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने हौज़ से चुल्लू में पानी ले कर उस के मुंह पर छींटे मारे, जूंही होश आया, फ़ौरन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के क़दमों में गिर पड़ा और रो रो कर अपने गुनाहों से तौबा की, फिर आप ही के दस्ते मुबारक पर बैअत हो गया ।

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के हुक्म पर उस ने ज़ुल्मो जोर से जम्अ़ की हुई सारी दौलत अस्ल मालिकों को लौटा दी और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की सोहबते बा बरकत में रहने लगा । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने कुछ ही अ़र्से में उसे फ़ुयूज़े बातिनी से माला माल कर के ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमाई और वहां से रुख़सत हो गए ।

(अल्लाह के ख़ास बन्दे अ़ब्दुहू, स. 506 बित्तग़य्युर)

निगाहे वली में वोह तासीर देखी *बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की कितनी बड़ी शान है कि एक निगाह में हाकिमे सब्ज़वार के दिल की दुन्या बदल कर रख दी, वाक़ेई **अल्लाह** वालों की निगाह में बड़ी तासीर होती है, इन की निगाहे विलायत ने लाखों लोगों के दिलों में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर के इन्हें राहे हिदायत पर गामज़न कर दिया, सिर्फ़ येही नहीं बल्कि इन बुज़ुर्गाने दीन ने अपने किरदार व अ़मल से कुफ़्रो शिर्क की तारीकियों में भटकने वाले अन गिनत (बे शुमार) ग़ैर मुस्लिमों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वह्दानिय्यत और प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत से आगाह कर के दाइरए इस्लाम में दाख़िल भी फ़रमाया । ताजुल औलिया, सय्यिदुल अस्फ़िया वारिसुन्नबी, अ़ताए रसूल, सुल्तानुल हिन्द, ह़ज़रते सय्यिदुना

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ सय्यिद मुईनुद्दीन हसन सन्जरी चिश्ती अजमेरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى का शुमार भी इन्ही बुज़ुर्गों में होता है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه छट्टी (6) सदी हिजरी में हिन्द तशरीफ़ लाए और एक अज़ीमुश्शान रूहानी व समाजी इन्क़िलाब का बाइस बने, हत्ता कि हिन्द का ज़ालिमो जाबिर हुक्मरान भी आप की शख़्सिय्यत से मरऊब हो कर ताइब हुवा और अक़ीदत मन्दों में शामिल हो गया। आइये ! ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़िन्दगी के हसीन पहलूओं के बारे में कुछ सुनते हैं।

विलादते बा सआदत

हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ सय्यिद मुईनुद्दीन हसन सन्जरी चिश्ती अजमेरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى सिने 537 हिजरी ब मुताबिक़ सिने 1142 ईसवी में सिजिस्तान या सेस्तान (मौजूदा ईरान) के अ़लाक़ा '**सन्जर**' में पैदा हुवे। (इक़्तिबासुल अन्वार, स. 345)

नाम व सिलसिलए नसब

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का इस्मे गिरामी हसन है और आप नजीबुत्तरफ़ैन हसनी व हुसैनी सय्यिद हैं। आप के मश्हूरो मा'रूफ़ अल्क़ाब **मुईनुद्दीन, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सुल्तानुल हिन्द, वारिसुन्नबी** और **अ़ताए रसूल** वग़ैरा हैं, आप का सिलसिलए नसब सय्यिद मुईनुद्दीन हसन बिन सय्यिद ग़ियासुद्दीन हसन बिन सय्यिद नजमुद्दीन ताहिर बिन सय्यिद अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ है।

(मुईनुल हिन्द हज़रते ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी, स. 18 मुलख़्ख़सन वग़ैरा)

वालिदैने करीमैन

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के वालिदे माजिद सय्यिद ग़ियासुद्दीन हसन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जिन का शुमार '**सन्जर**' के उमरा व रुअसा में होता था, इन्तिहाई मुत्तक़ी व परहेज़गार और साहिबे करामत बुज़ुर्ग थे। नीज़ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की वालिदए माजिदा भी अकसर अवक़ात इबादतो रियाज़त में मश्ग़ूल रहने वाली नेक सीरत ख़ातून थीं। (**अल्लाह** के ख़ास बन्दे अ़ब्दुहू, स. 506 बित्तग़य्युर) जब हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़

رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه पन्दरह[15] साल की उम्र को पहुंचे तो वालिदे मोहतरम का विसाले पुर मलाल हो गया। विरासत में एक **बाग़** और एक **पन चक्की** (या'नी पानी से चलने वाली चक्की) मिली। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उसी को ज़रीअ़ए मआ़श बना लिया और ख़ुद ही बाग़ की निगहबानी करते और दरख़्तों की आबयारी फ़रमाते। (मिरआतुल अस्रार, स. 593 बित्तग़य्युर)

वलिय्युल्लाह के जूठे की बरकत

एक रोज़ हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی बाग़ में पौदों को पानी दे रहे थे कि एक मज्ज़ूब बुज़ुर्ग हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम क़ुन्दोज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बाग़ में तशरीफ़ लाए। जूं ही हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मुईनुद्दीन عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِین की नज़र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस मक़्बूल बन्दे पर पड़ी, फ़ौरन दौड़े, सलाम कर के दस्त बोसी की और निहायत अदबो एह़तिराम के साथ दरख़्त के साए में बिठाया। फिर इन की ख़िदमत में इन्तिहाई आ़जिज़ी के साथ ताज़ा अंगूरों का एक ख़ोशा पेश किया और दो ज़ानू बैठ गए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली को इस नौ जवान बाग़बान का अन्दाज़ भा गया, ख़ुश हो कर खली (तल या सरसों का फूक) का एक टुकड़ा चबा कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मुंह में डाल दिया। खली का टुकड़ा जूं ही ह़ल्क़ से नीचे उतरा, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के दिल की कैफ़िय्यत यक्दम बदल गई और दिल दुन्या की मह़ब्बत से उचाट हो गया। फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने बाग़, पन चक्की और सारा साज़ो सामान बेच कर इस की क़ीमत फ़ुक़रा व मसाकीन में तक़्सीम फ़रमा दी और ह़ुसूले इ़ल्मे दीन की ख़ातिर राहे ख़ुदा के मुसाफ़िर बन गए। (मिरआतुल अस्रार, स. 593 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा वाक़िए़ से हमें येह दर्स मिलता है कि जब हम किसी मजलिस में बैठे हों और हमारे बुज़ुर्ग, असातिज़ा, मां–बाप, कोई आ़लिमे दीन या पीरो मुर्शिद आ जाएं तो हमें उन की ता'ज़ीम के लिये खड़ा हो जाना चाहिये, उन्हें इ़ज़्ज़तो एह़तिराम

के साथ बिठाना चाहिये । याद रखिये ! अदब ऐसी शै है कि जिस के ज़रीए इन्सान दुन्यवी व उख़रवी ने'मतें हासिल कर लेता है और जो इस सिफ़त से महरूम होता है बसा अवक़ात वोह इन ने'मतों का भी हक़दार नहीं होता । शायद इसी लिये कहा जाता है कि **'बा अदब बा नसीब, बे अदब बे नसीब'** यक़ीनन अदब ही इन्सान को मुमताज़ बनाता है, जिस तरह रैत के ज़र्रों में मोती अपनी चमक और अहम्मिय्यत नहीं खोता, इसी तरह बा अदब शख़्स भी लोगों में अपनी शनाख़्त को क़ाइम व दाइम रखता है । लिहाज़ा हमें भी अपने बड़ों का अदबो एहतिराम करने और छोटों के साथ शफ़्क़त व महब्बत से पेश आना चाहिये । आइये ! इस ज़िम्न में 3 अहादीसे मुबारका सुनिये और अमल का जज़्बा पैदा कीजिये ।

1. दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ अनस ! बड़ों का अदबो एहतिराम और ता'ज़ीम व तौक़ीर करो और छोटों पर शफ़्क़त करो, तुम जन्नत में मेरी रफ़ाक़त पा लोगे ।

(شعب الایمان، باب فی رحم الصغیر، ۷/۴۵۸، حدیث:۱۰۹۸۱)

2. नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलिशान है : जिस ने हमारे छोटों पर रहम न किया और हमारे बड़ों की ता'ज़ीम न की वोह हम में से नहीं ।

(ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی رحمة الصبیان، ۳/۳۶۹، حدیث:۱۹۲۶)

3. सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो जवान किसी बुढ़े का उस की उम्र की वजह से इकराम करे, इस के बदले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी के ज़रीए उस की इज़्ज़त अफ़ज़ाई करवाता है ।

(ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی اجلال الکبیر، ۳/۴۱۱، حدیث: ۲۰۲۹)

बड़े जितने भी हैं घर में अदब करता रहूं सब का
करूं छोटे बहन भाई पे शफ़्क़त या रसूलल्लाह

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हुसूले इल्म के लिये सफ़र

हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने 15 बरस की उ़म्र में हुसूले इल्म के लिये सफ़र इख़्तियार किया और समर क़न्द में हज़रते सय्यिदुना मौलाना शरफ़ुद्दीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर बा क़ाइदा तह़सीले इल्मे दीन का आग़ाज़ किया। पहले पहल क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ किया और बा'दे अज़ां इन्ही से दीगर उ़लूम ह़ासिल किये। (अल्लाह के ख़ास बन्दे अ़ब्दुहू, स. 508 मुलख़्ख़सन) मगर जैसे जैसे इल्मे दीन सीखते गए ज़ौक़े इल्म बढ़ता गया, चुनान्चे, इल्म की प्यास बुझाने के लिये बुख़ारा का रुख़ किया और शोहरए आफ़ाक़ आ़लिमे दीन मौलाना ह़िसामुद्दीन बुख़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی के सामने ज़ानूए तलम्मुज़ तह किया (या'नी शागिर्दगी इख़्तियार की) और फिर इन्ही की शफ़्क़तों के साए में आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने थोड़े ही अ़र्से में तमाम दीनी उ़लूम की तक्मील कर ली। इस त़रह़ आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मजमूई त़ौर पर तक़रीबन पांच साल समर क़न्द और बुख़ारा में हुसूले इल्म के लिये क़ियाम फ़रमाया। (अल्लाह के ख़ास बन्दे अ़ब्दुहू, स. 508 मुलख़्ख़सन)

त़ालिब मत़लूब के दर पर

इस अ़र्से में उ़लूमे ज़ाहिरी की तक्मील तो हो चुकी थी मगर जिस तड़प की वजह से घर बार को ख़ैरबाद कहा था उस की तस्कीन अभी बाक़ी थी। चुनान्चे, किसी ऐसे ह़ाज़िक़ (या'नी माहिर) त़बीब की तलाश में निकल खड़े हुवे जो दर्दे दिल की दवा कर सके। अब आप ने मुर्शिदे कामिल की जुस्त्जू में बुख़ारा से ह़िजाज़ का रख़्ते सफ़र बांधा। रास्ते में जब नैशापूर (सूबए ख़ुरासान रज़वी ईरान) के नवाह़ी अ़लाक़े **'हारवन'** से गुज़र हुवा और मर्दे क़लन्दर क़ुत़्बे वक़्त हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान हारवनी चिश्ती عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی का शोहरा सुना तो फ़ौरन ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवे और इन के दस्ते ह़क़ परस्त पर बैअ़त कर के सिलसिलए चिश्तिया में दाख़िल हो गए।

(मिरआतुल अस्रार, स. 594 मुलख़्ख़सन)

यक दर गीर मोह्कम गीर

आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कई साल तक मुर्शिदे कामिल की ख़िदमत में ह़ाज़िर रहे और मा'रिफ़त की मनाज़िल तै करते हुवे बात़िनी उ़लूम से फ़ैज़याब होते रहे । ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा उ़स्मान हारवनी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْغَنِی जहां भी तशरीफ़ ले जाते, आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उन का सामान अपने कन्धों पर उठाए साथ जाते नीज़ आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को कई मरतबा मुर्शिद के साथ ह़ज की सआ़दत भी ह़ासिल हुई ।

(**अल्लाह** के ख़ास बन्दे अ़ब्दुहू, स. 509 मुलख़्ख़सन)

आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जब मेरे पीरो मुर्शिद ख़्वाजा उ़स्मान हारवनी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْغَنِی ने मेरी ख़िदमत और अ़क़ीदत देखी तो ऐसी कमाले ने'मत अ़त़ा फ़रमाई जिस की कोई इन्तिहा नहीं ।

मुरीद हो तो ऐसा

उ़मूमन जिस त़रह़ हर शागिर्द की आरज़ू होती है कि उस्ताद की आंखों का तारा बन जाऊं, इसी त़रह़ एक मुरीद की ख़्वाहिश होती है कि मैं अपने पीरो मुर्शिद का मन्ज़ूरे नज़र बन जाऊं, मगर ऐसे क़िस्मत के धनी बहुत कम होते हैं, जिन की येह तमन्ना पूरी होती है । ह़ज़रते ख़्वाजा मुईनुद्दीन ह़सन सन्जरी चिश्ती अजमेरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی बारगाहे मुर्शिद में इस क़दर मक़्बूल थे कि एक मौक़अ़ पर ख़ुद मुर्शिदे करीम ख़्वाजा उ़स्मान हारवनी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْغَنِی ने फ़रमाया : हमारा मुईनुद्दीन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मह़बूब है हमें अपने मुरीद पर फ़ख़्र है ।

(मिरआतुल अस्रार, स. 595)

ग़ौसे आ'ज़म से अ़क़ीदत

जिस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बग़दादे मुक़द्दस में इरशाद फ़रमाया : قَدَمِیْ ھٰذِہٖ عَلٰی رَقَبَۃِ کُلِّ وَلِیِّ اللہ या'नी मेरा येह क़दम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हर वली की गर्दन पर है । तो उस वक़्त ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ सय्यिदुना मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی

अपनी जवानी के दिनों में मुल्के ख़ुरासान में वाक़ेअ़ एक पहाड़ी के दामन में इ़बादत किया करते थे, जब आप ने येह फ़रमाने आ़ली सुना तो अपना सर झुका लिया और फ़रमाया : 'بَلْ قَدَمَاكَ عَلٰى رَأْسِيْ وَعَيْنِيْ' बल्कि आप के क़दम मेरे सर और आंखों पर हैं। (ग़ौसे पाक के ह़ालात, स. 67)

बारगाहे रिसालत से हिन्द की सुल्त़ानी मिल गई

बारगाहे रिसालत में ख़्वाजा मुईनुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن के मर्तबे का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को मदीने शरीफ़ की ह़ाज़िरी का शरफ़ मिला तो निहायत अदबो एह़तिराम के साथ यूं सलाम अ़र्ज़ किया : 'اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ الْمُرْسَلِيْن وَخَاتَمَ النَّبِيِّيْن' इस पर रौज़ए अक़्दस से आवाज़ आई : وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ يَا قُطْبَ الْمَشَائِخ (**अल्लाह** के ख़ास़ बन्दे अ़ब्दुहू, स. 510 बित्तग़य्युर) नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को हिन्द की सुल्त़ानी भी बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही से अ़त़ा हुई। चुनान्चे,

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले '**ख़ौफ़नाक जादूगर**' के सफ़ह़ा 2 पर तह़रीर फ़रमाते हैं कि :

सिलसिलए आ़लिया चिश्तिया के अ़ज़ीम पेशवा ख़्वाजए ख़्वाजगान, सुल्त़ानुल हिन्द ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ह़सन सन्जरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى को मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا की ह़ाज़िरी के मौक़अ़ पर सय्यिदुल मुर्सलीन, ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से येह बिशारत मिली : "ऐ मुईनुद्दीन ! तू हमारे दीन का मुईन (या'नी दीन का मददगार) है, तुझे हिन्दुस्तान की विलायत अ़त़ा की, अजमेर जा, तेरे वुजूद से बे दीनी दूर होगी और इस्लाम रौनक़ पज़ीर होगा।"

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सुल्तानुल हिन्द का सफ़रे हिन्द

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस बिशारत के बा'द हिन्द रवाना हुवे और समरक़न्द, बुख़ारा, उ़रूसुल बिलाद बग़दाद शरीफ़, नैशापूर, तबरीज़, औश, अस्फ़हान, सब्ज़वार, ख़ुरासान, ख़िरक़ान, इस्तराबाद, बल्ख़ और ग़ज़नी वग़ैरा से होते हुवे हिन्द के शहर अजमेर शरीफ़ (सूबए राजस्थान) पहुंचे। इस पूरे सफ़र में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सेंकड़ों औलियाउल्लाह और अकाबिरीने उम्मत से मुलाक़ात की। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **बग़दादे मुअ़ल्ला** में ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म मुहयुद्दीन सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और पांच (5) माह तक बारगाहे ग़ौसिया से भी इक्तिसाबे फ़ैज़ किया। **तबरीज़** में शैख़ बदरुद्दीन अबू सईद तबरीज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की बारगाह से इ़ल्म की मीरास ह़ासिल की। **अस्फ़हान** में शैख़ मह़मूद अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی के पास ह़ाज़िर हुवे और **ख़िरक़ान** में शैख़ अबू सईद अबुल ख़ैर और ख़्वाजा अबुल ह़सन ख़िरक़ानी قُدِّسَ سِرُّہُمَا النُّوْرَانِی के मज़ारात पर ह़ाज़िरी दी। **इस्तराबाद** में ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ नासिरुद्दीन इस्तराबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی से कसबे फ़ैज़ किया। **हरात** में शैख़ुल इस्लाम इमाम अ़ब्दुल्लाह अन्सारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی के मज़ार की ज़ियारत की और **बल्ख़** में शैख़ अह़मद ख़िज़्रविय्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़ानक़ाह में क़ियाम फ़रमाया। (**अल्लाह** के ख़ास बन्दे अ़ब्दुहू, स. 511 मुलख़्ख़सन)

दाता के मज़ार पर ख़्वाजा की ह़ाज़िरी

इसी सफ़र में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते दाता गन्ज बख़्श सय्यिद अ़ली हजवेरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के मज़ारे अक़्दस पर न सिर्फ़ ह़ाज़िरी दी बल्कि 40 दिन मुराक़बा भी किया और ह़ज़रते सय्यिदुना दाता गन्ज बख़्श رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का ख़ुसूसी फ़ैज़ ह़ासिल किया। (मिरआतुल अस्रार, स. 598, मुलख़्ख़सन) मज़ारे पुर अन्वार से रुख़्सत होते वक़्त दाता गन्ज बख़्श رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की अ़ज़मत व फ़ैज़ान का बयान इस शे'र के ज़रीए किया :

गन्ज बख़्श फ़ैज़े आ़लम, मज़हरे नूरे ख़ुदा
नाक़िसां रा पीरे कामिल, कामिलां रा रहनुमा

या'नी गन्ज बख़्श दाता अ़ली हजवेरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی का फ़ैज़ सारे आ़लम पर जारी है और आप नूरे ख़ुदा के मज़हर हैं, आप का मक़ाम येह है कि राहे त़रीक़त में जो नाक़िस हैं उन के लिये पीरे कामिल और जो ख़ुद पीरे कामिल हैं उन के लिये भी राहनुमा हैं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर **अल्लाह** वालों के ह़ालाते ज़िन्दगी का मुशाहदा किया जाए तो येही बात सामने आती है कि इन की ज़िन्दगी के मा'मूलात और रोज़ मर्रह की आ़दात, अह़कामाते रब्बे ज़ुल जलाल और सुन्नते रसूले बे मिसाल के ऐन मुत़ाबिक़ होती हैं। ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की सारी ज़िन्दगी इसी का मज़हर है। आइये आप की चन्द आ़दाते मुबारका के बारे में सुनते हैं :

तिलावते क़ुरआन और शब बेदारी

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मा'मूल था कि सारी सारी रात इ़बादते इलाही में मस्रूफ़ रहते, ह़त्ता कि इ़शा के वुज़ू से नमाज़े फ़ज्र अदा करते और तिलावते क़ुरआन से इस क़दर शग़फ़ था कि दिन में दो क़ुरआने पाक ख़त्म फ़रमा लेते, दौराने सफ़र भी क़ुरआने पाक की तिलावत जारी रहती।

(मिरआतुल अस्रार, स. 595 बित्तग़य्युर)

कम खाने की आ़दत

दीगर बुज़ुर्गाने दीन और औलियाए कामिलीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की त़रह़ आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ भी ज़ियादा से ज़ियादा इ़बादते इलाही बजा लाने की ख़ात़िर बहुत ही कम खाना तनावुल फ़रमाते ताकि खाने की कसरत की वजह से सुस्ती, नींद या ग़ुनूदगी इ़बादत में रुकावट का बाइ़स न बने, चुनान्चे, आप के बारे में मन्क़ूल है कि सात (7) रोज़ बा'द दो ढाई तोला वज़्न के बराबर रोटी पानी में भिगो कर खाया करते। (मिरआतुल अस्रार, स. 595 बित्तग़य्युर)

लिबास मुबारक और सादगी

अल्लाह वालों की शान है कि वोह ज़ाहिरी ज़ैबो आराइश के बजाए बातिन की सफ़ाई पर ज़ोर देते हैं। हज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के लिबास मुबारक में भी इन्तिहा दरजे की सादगी नज़र आती थी, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का लिबास सिर्फ़ दो चादरों पर मुश्तमिल होता और इस में भी कई कई पैवन्द लगे होते, गोया लिबास से भी सुन्नते मुस्तफ़ा से बे पनाह महब्बत की झलक दिखाई देती थी नीज़ पैवन्द लगाने में भी इस क़दर सादगी इख़्तियार करते कि जिस रंग का कपड़ा मयस्सर होता उसी को शरफ़ बख़्श देते।

(मिरआतुल अस्रार, स. 595 मुलख़्ख़सन)

पड़ोसियों से हुस्ने सुलूक

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने पड़ोसियों का बहुत ख़याल रखा करते, उन की ख़बरगीरी फ़रमाते, अगर किसी पड़ोसी का इन्तिक़ाल हो जाता तो उस के जनाज़े के साथ ज़रूर तशरीफ़ ले जाते, उस की तदफ़ीन के बा'द जब लोग वापस हो जाते तो आप तन्हा उस की क़ब्र के पास तशरीफ़ फ़रमा हो कर उस के हक़ में मग़फ़िरत व नजात की दुआ फ़रमाते नीज़ उस के अहले ख़ाना को सब्र की तल्क़ीन करते और उन्हें तसल्ली दिया करते। आप के हिल्म व बुर्दबारी जूदो सख़ावत और दीगर अख़्लाक़े आलिय्या से मुतअस्सिर हो कर लोग उम्दा अख़्लाक़ के हामिल और पाकीज़ा सिफ़ात के पैकर हुवे और आप के दस्ते अक़्दस पर तक़रीबन नव्वे (90) लाख ग़ैर मुस्लिम मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे। (मुईनुल अरवाह, स. 188 बित्तग़य्युर)

अफ़्व व बुर्दबारी

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बहुत ही नर्म दिल और मुतहम्मिल मिज़ाज, सन्जीदा तबीअत के मालिक थे। अगर कभी ग़ुस्सा आता तो सिर्फ़ दीनी ग़ैरत व हमिय्यत की बुन्याद पर आता, अलबत्ता ज़ाती तौर पर

अगर कोई सख़्त बात कह भी देता तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बरहम न होते बल्कि उस वक़्त भी हुस्ने अख़्लाक़ और ख़न्दा पेशानी का मुज़ाहरा करते हुवे सब्र का दामन हाथ से न जाने देते और ऐसा मा'लूम होता कि आप ने उस की ना ज़ैबा बातें सुनी ही न हों।

(हज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, हयात व ता'लीमात, स. 39, बित्तग़य्युर)

ख़ौफ़े ख़ुदा

हज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه पर ख़ौफ़े ख़ुदा इस क़दर ग़ालिब था कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه हमेशा ख़शिय्यते इलाही से कांपते और गिर्या व ज़ारी करते, ख़ल्के ख़ुदा को ख़ौफ़े ख़ुदा की तल्क़ीन करते हुवे इरशाद फ़रमाया करते : ऐ लोगो ! अगर तुम ज़ेरे ख़ाक सोए हुवे लोगों का हाल जान लो तो मारे ख़ौफ़ के खड़े खड़े पिघल जाओ। (मुईनुल अरवाह, स. 185 मुलख़्ख़सन)

क़ब्र महबूब के जल्वों से बसा दे मालिक
येह करम कर दे तो मैं शाद रहूंगा या रब

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पर्दा पोशी

हज़रते ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى अपने पीरो मुर्शिद हज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की सिफ़ात (ख़ूबियां) बयान करते हुवे फ़रमाते हैं कि मैं कई बरस तक ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर रहा लेकिन कभी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ज़बाने अक़्दस से किसी का राज़ फ़ाश होते नहीं देखा, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه कभी किसी मुसलमान का भेद (या'नी राज़) न खोलते। (हज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, हयात व ता'लीमात, स. 41, बित्तग़य्युर)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी मुसलमान भाई का भेद न खोलना और उस की पर्दा पोशी करना, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक बहुत ज़ियादा महबूब अ़मल है। चुनान्चे,

मुसलमान की पर्दापोशी का अज्र

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो अपने भाई की पर्दापोशी करेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की पर्दापोशी फ़रमाएगा और जो अपने भाई के राज़ खोलेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का राज़ ज़ाहिर कर देगा यहां तक कि वोह अपने घर ही में रुस्वा हो जाएगा।"

(سنن ابن ماجه، کتاب الحدود، باب الستر علی المومن، ۳/۲۱۹، حدیث: ۲۵۴۶)

ऐब दुन्या में तू ने छुपाए हश्र में भी न अब आंच आए
आह ! नामा मेरा खुल रहा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुर्शिदे कामिल के मज़ारे मुबारक की ता'ज़ीम

एक मरतबा हज़रते ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन सन्जरी चिश्ती عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अपने मुरीदीन की तर्बिय्यत फ़रमा रहे थे। दौराने बयान जब जब आप की नज़र दाईं त़रफ़ पड़ती तो बा अदब खड़े हो जाते। तमाम मुरीदीन येह देख कर हैरान थे कि पीरो मुर्शिद बार बार क्यूं खड़े हो रहे हैं ? मगर किसी को पूछने की जुरअत न हो सकी। अल ग़रज़ जब सब लोग वहां से चले गए, तो एक मन्ज़ूरे नज़र मुरीद अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : हुज़ूर ! हमारी तर्बिय्यत के दौरान आप ने बारहा क़ियाम फ़रमाया, इस में क्या ह़िक्मत थी ? हज़रते ख़्वाजा मुईनुद्दीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن ने फ़रमाया : उस त़रफ़ पीरो मुर्शिद शैख़ उ़स्मान हारवनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی का मज़ारे मुबारक है, जब भी उस जानिब रुख़ होता तो मैं ता'ज़ीम के लिये उठ जाता, पस मैं अपने पीरो मुर्शिद के रौज़ए मुबारक की ता'ज़ीम में क़ियाम करता था। (आदाबे मुर्शिदे कामिल, स. 114 बित्तग़य्युर)

मल्फ़ूज़ात

सुल्तानुल हिन्द, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाह में अक़ीदत मन्दों और मुरीदों का हर वक़्त हुजूम रहता, जिन की ज़ाहिरी व बातिनी इस्लाह के लिये मल्फ़ूज़ात का सिलसिला जारी व सारी रहता। ज़बाने हक़्क़े तर्जुमान से जो अल्फ़ाज़ निकलते, उसे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ख़लीफ़ए अक्बर व सज्जादा नशीन हज़रते ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़ौरन लिख लिया करते। यूं हज़रते बख़्तियार काकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى ने अपने पीरो मुर्शिद के मल्फ़ूज़ात पर मुश्तमिल एक किताब तरतीब दी। आइये ! इस गुलशने अजमेरी से चन्द मदनी फूल सुनते हैं।

1. जो बन्दा रात को बा त़हारत सोता है, तो फ़िरिश्ते गवाह रहते हैं और सुब्ह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अ़र्ज़ करते हैं ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इसे बख़्श दे येह बा त़हारत सोया था। (हिश्त बिहिश्त, स. 77)

2. नमाज़ एक राज़ की बात है जो बन्दा अपने परवर दगार से कहता है, चुनान्चे, ह़दीसे पाक में आया है : إِنَّ الْمُصَلِّي يُنَاجِي رَبَّه

(كنز العمال، كتاب الصلوة، ٤/١٧٩، حديث: ١٩١٧٠، الجزء الثاني)

या'नी नमाज़ पढ़ने वाला अपने परवर दगार से राज़ की बात कहता है। (हिश्त बिहिश्त, स. 75)

3. जो शख़्स झूटी क़सम खाता है वोह अपने घर को वीरान करता है और उस के घर से ख़ैरो बरकत उठ जाती है। (हिश्त बिहिश्त, स. 84)

4. मुसीबत ज़दा लोगों की फ़रयाद सुनना और उन का साथ देना, ह़ाजत मन्दों की ह़ाजत रवाई करना, भूकों को खाना खिलाना, असीरों को क़ैद से छुड़ाना येह बातें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक बड़ा मर्तबा रखती हैं। (मुईनुल हिन्द ह़ज़रते ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी, स. 124)

5. नेकों की सोहबत नेक काम से बेहतर और बुरे लोगों की सोहबत बदी करने से भी बदतर है।

6. बद बख़्ती की अ़लामत येह है कि इन्सान गुनाह करने के बा वुजूद भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में खुद को मक़्बूल समझे।

7. खुदा का दोस्त वोह है जिस में येह तीन (3) ख़ूबियां हों : सख़ावत दरया जैसी, शफ़्क़त आफ़्ताब की त़रह़ और तवाज़ोअ़ ज़मीन की मानिन्द। (ख़ौफ़नाक जादूगर, स. 25)

फ़ख़्रो ग़ुरूर से तू मौला मुझे बचाना
या रब ! मुझे बना दे पैकर तू आ़जिज़ी का

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

करामात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़र्रब बन्दे अपनी तमाम तर ज़िन्दगी उस के अह़काम की बजा आवरी और उस के ज़िक्र में बसर करते हैं, दुन्यवी लज़्ज़तों और आसाइशों को छोड़ कर तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत में गुज़ार देते हैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें बत़ौरे इन्आ़म, आख़िरत में तो बुलन्दो बाला दरजात और बे शुमार ने'मतों से सरफ़राज़ फ़रमाता ही है लेकिन दुन्या में भी उन के मक़ाम व मर्तबे को लोगों पर ज़ाहिर करने के लिये कुछ ख़साइस व करामात अ़त़ा फ़रमाता है। ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बे शुमार करामात से नवाज़ रखा था। आइये ! इन में से चन्द करामात सुनिये और अपने दिलों में औलियाए किराम की मह़ब्बत को मज़ीद उजागर कीजिये !

﴾1﴿ मुर्दा ज़िन्दा कर दिया

एक बार अजमेर शरीफ़ के ह़ाकिम ने किसी शख़्स को बे गुनाह सूली पर चढ़ा दिया और उस की मां को कहला भेजा कि अपने बेटे की लाश ले जाए। दुख्यारी मां ग़म से निढ़ाल हो कर रोती हुई

हज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बारगाहे बे कस पनाह में हाज़िर हुई और फ़रयाद करने लगी : आह ! मेरा सहारा छिन गया, मेरा घर उजड़ गया, मेरा एक ही बेटा था, हाकिम ने उसे बे क़ुसूर सूली पर चढ़ा दिया । येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जलाल में आ गए और फ़रमाया : मुझे उस की लाश के पास ले चलो । जूं ही आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه लाश के क़रीब पहुंचे तो इशारा कर के फ़रमाया : ऐ मक़्तूल ! अगर हाकिमे वक़्त ने तुझे बे क़ुसूर सूली दी है, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से उठ खड़ा हो । लाश में फ़ौरन हरकत पैदा हुई और देखते ही देखते वोह शख़्स ज़िन्दा हो कर खड़ा हो गया ।

(ख़ौफ़नाक जादूगर, स. 16 बित्तग़य्युर)

﴾2﴿ अज़ाबे क़ब्र से रिहाई

हज़रते सय्यिदुना बख़्तियार काकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने एक मुरीद के जनाज़े में तशरीफ़ ले गए, नमाज़े जनाज़ा पढ़ा कर अपने दस्ते मुबारक से क़ब्र में उतारा । तदफ़ीन के बा'द एक एक कर के सब लोग चले गए, मगर हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه क़ब्र के पास तशरीफ़ फ़रमा रहे । अचानक आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ग़मगीन हो गए । कुछ देर के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़बान पर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن जारी हुवा और आप मुत़्मइन हो गए । मेरे इस्तिफ़्सार पर फ़रमाया : इस के पास अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते आ गए थे, जिस की वजह से मैं परेशान हो गया, इतने में मेरे मुर्शिदे गिरामी हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा उ़स्मान हारवनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى तशरीफ़ लाए और फ़िरिश्तों से कहा : येह बन्दा मेरे मुरीद मुईनुद्दीन का मुरीद है, इस को छोड़ दो । फ़िरिश्तों ने कहा : येह बहुत ही गुनहगार शख़्स था । यकायक ग़ैब से आवाज़ आई : ऐ फ़िरिश्तो ! हम ने उ़स्मान हारवनी के सदक़े मुईनुद्दीन चिश्ती के मुरीद को बख़्श दिया । (ख़ौफ़नाक जादूगर, स. 8 बित्तग़य्युर क़लील)

﴾3﴿ छागल में तालाब

हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के चन्द मुरीद एक बार अजमेर शरीफ़ के मश्हूर तालाब अना सागर पर ग़ुस्ल करने गए तो ग़ैर मुस्लिमों ने शोर मचा दिया कि येह मुसलमान हमारे तालाब को '**नापाक**' कर रहे हैं । चुनान्चे, वोह ह़ज़रात लौटे और सारा माजरा ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में अ़र्ज़ कर दिया । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक ख़ादिम को छागल (या'नी पानी रखने का मिट्टी का बरतन) देते हुवे इरशाद फ़रमाया : इस में तालाब का पानी भर लाओ । ख़ादिम ने जूं ही पानी भरने के लिये छागल तालाब में डाला तो उस का सारा पानी छागल में आ गया । लोग पानी न मिलने पर बे क़रार हो गए और आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमते सरापा करामत में ह़ाज़िर हो कर फ़रयाद करने लगे, चुनान्चे, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ख़ादिम को हुक्म दिया कि जाओ और पानी वापस तालाब में उंडेल दो । ख़ादिम ने हुक्म की ता'मील की तो अना सागर फिर पानी से लबरैज़ हो गया ।

(ख़ौफ़नाक जादूगर, स. 7)

है तेरी ज़ात अजब बह़्रे ह़क़ीक़त प्यारे
किसी तैराक ने पाया न किनारा तेरा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रिसाला ख़ौफ़नाक जादूगर का तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की येह करामत शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "ख़ौफ़नाक जादूगर" से ली गई है । इस रिसाले में ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की न सिर्फ़ कई करामात का ज़िक्र है बल्कि औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की करामात पर ज़ेह्न में पैदा होने वाले वसाविस की काट भी की गई है नीज़ आख़िर में ख़्वाजा साह़िब की मन्क़बत भी

मौजूद है। येह रिसाला हदिय्यतन ह़ासिल कर के खुद भी पढ़ें और लंगरे रसाइल या'नी तोहूफ़तन दूसरों को पेश करें।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾4﴿ हर रात त़वाफ़े का'बा

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का कोई मुरीद या अहले महृब्बत अगर ह़ज या उ़मरह की सआ़दत पाता और त़वाफ़े का'बा के लिये ह़ाज़िर होता तो देखता कि ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه त़वाफ़े का'बा में मश्ग़ूल हैं, उधर अहले ख़ाना और दीगर अह़बाब येह समझते कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने हुजरे में मौजूद हैं। बिल आख़िर एक दिन येह राज़ खुल ही गया कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बैतुल्लाह शरीफ़ ह़ाज़िर हो कर सारी रात त़वाफ़े का'बा में मश्ग़ूल रहते हैं और सुब्ह़ अजमेर शरीफ़ वापस आ कर बा जमाअ़त नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमाते हैं। (इक्तिबासुल अन्वार, स. 373)

﴾5﴿ अनोखा ख़ज़ाना

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के आस्तानए मुबारका पर रोज़ाना इस क़दर लंगर का एहतिमाम होता कि शहर भर से ग़ुरबा व मसाकीन आते और सैर हो कर खाते। ख़ादिम जब अख़राजात के लिये आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बारगाह में दस्त बस्ता अ़र्ज़ करता तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुसल्ले का किनारा उठा देते, जिस के नीचे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से ख़ज़ाना ही ख़ज़ाना नज़र आता। चुनान्चे, ख़ादिम आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के हुक्म से ह़स्बे ज़रूरत ले लेता।

(इक्तिबासुल अन्वार, स. 376)

विसाले पुर मलाल

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के विसाल की शब बा'ज़ बुज़ुर्गों ने ख़्वाब में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना : मेरे दीन का मुईन ह़सन सन्जरी आ रहा है मैं अपने मुईनुद्दीन के इस्तिक़्बाल के लिये आया हूं। चुनान्चे, 6 रजबुल मुरज्जब

सिने 633 हिजरी ब मुताबिक़ 16 मार्च 1236 ईसवी बरोज़ पीर फ़ज्र के वक़्त मुहिब्बीन इन्तिज़ार में थे कि पीरो मुर्शिद आ कर नमाज़े फ़ज्र पढ़ाएंगे, मगर काफ़ी देर गुज़र जाने के बा'द जब ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के हुजरे शरीफ़ का दरवाज़ा खोल कर देखा गया तो ग़म का समन्दर उमंड आया क्यूंकि हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजए ख़्वाजगान सुल्तानुल हिन्द, मुईनुद्दीन हसन चिश्ती अजमेरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى विसाल फ़रमा चुके थे और देखने वालों ने येह हैरत अंगेज़ रूहानी मन्ज़र अपनी आंखों से देखा कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की नूरानी पेशानी पर येह इबारत नक़्श थी حَبِيْبُ اللهِ مَاتَ فِىْ حُبِّ اللهِ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का महबूब बन्दा महब्बते इलाही में विसाल कर गया।)

(**अल्लाह** के ख़ास बन्दे अब्दुहू, स. 521 मुलख़्ख़सन वग़ैरा)

मज़ार शरीफ़ और उर्स मुबारक

सुल्तानुल हिन्द, ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन सन्जरी चिश्ती अजमेरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى का मज़ारे अक़्दस हिन्द के मश्हूर शहर **अजमेर शरीफ़** (सूबए राजस्थान शिमाली हिन्द) में है। जहां हर साल आप का उर्स मुबारक 6 रजबुल मुरज्जब को निहायत तुज़्क व एहतिशाम के साथ मनाया जाता है और इसी तारीख़ की निस्बत से उर्स मुबारक को '**छटी शरीफ़**' भी कहा जाता है इस उर्स में मुल्क व बैरूने मुल्क से हज़ारों आशिक़ाने रसूल बड़े जोश व जज़्बे से शिर्कत कर के ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से अपनी अक़ीदत का इज़्हार करते हैं।

ख़्वाजा के सदक़े सिह्हत याबी

आ'ला हज़रत इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : हज़रते ख़्वाजा (ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) के मज़ार से बहुत कुछ फ़ुयूज़ो बरकात हासिल होते हैं, मौलाना बरकात अहमद साहिब मर्हूम जो मेरे पीर भाई और मेरे वालिदे माजिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के शागिर्द थे, उन्हों ने मुझ से बयान किया कि मैं ने अपनी आंखों से देखा कि एक ग़ैर मुस्लिम जिस के सर से पैर तक

फोड़े थे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही जानता है कि किस क़दर थे, ठीक दो पहर को आता और दरगाह शरीफ़ के सामने गर्म कंकरों और पथ्थरों पर लौटता और कहता "ख़्वाजा अगन ((کھواجہ اگن) या'नी ऐ ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه जलन) लगी है।" तीसरे रोज़ मैं ने देखा कि बिल्कुल अच्छा हो गया है। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत, स. 384)

ख़्वाजए हिन्द वोह दरबार है आ'ला तेरा
कभी महरूम नहीं मांगने वाला तेरा

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की मुबारक ज़िन्दगी के बारे में सुना कि किस तरह एक वलिय्युल्लाह के अदब की बरकत से आप के दिल की दुन्या बदली, आप ने विरासत में मिलने वाला बाग़ और दीगर सामान राहे ख़ुदा में सदक़ा कर दिया और ख़ुद हुसूले इल्मे दीन के लिये राहे ख़ुदा के मुसाफ़िर बन गए, ज़ाहिरी उ़लूम की तक्मील के बाद मुर्शिदे कामिल की जुस्तजू में ख़्वाजा उ़स्मान हारवनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पास पहुंचे और बीस साल तक इन की सोहबत में रह कर वोह मक़ाम ह़ासिल कर लिया कि जब बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे तो प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप को हिन्द की विलायत अ़ता फ़रमाई, आप के किरदार व अ़मल से मुतअस्सिर हो कर लाखों ग़ैर मुस्लिम मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की मुबारक आ़दात में सादगी, कम खाना, पड़ोसियों से हुस्ने सुलूक से पेश आना, अ़फ़्वो दर गुज़र करना नीज़ मुसलमान भाई की पर्दा पोशी करना वग़ैरा शामिल हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी बुज़ुर्गाने दीन के नक़्शे क़दम पर चलने और इन से ख़ूब महब्बत व अ़क़ीदत रखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मजलिसे मज़ाराते औलिया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी दुन्या भर में नेकी की दा'वत आ़म करने, सुन्नतों की ख़ुश्बू फैलाने, इ़ल्मे दीन की शम्एं जलाने में मसरूफ़ है। दुन्या के कमो बेश 192 मुमालिक में इस का मदनी पैग़ाम पहुंच चुका है। सारी दुन्या में मदनी काम को मुनज़्ज़म करने के लिये तक़रीबन 95 से ज़ियादा शो'बाजात क़ाइम हैं, इन्ही में से एक शो'बा '**मजलिसे मज़ाराते औलिया**' भी है, इस मजलिस के ज़िम्मेदारान दीगर मदनी कामों के साथ साथ बुज़ुर्गाने दीन के मज़ाराते मुबारका पर ह़ाज़िर हो कर मुख़्तलिफ़ दीनी ख़िदमात सर अन्जाम देते हैं। मसलन ह़त्तल मक़्दूर साहि़बे मज़ार के उ़र्स के मौक़अ़ पर इजतिमाए ज़िक्रो ना'त का इनइ़क़ाद, मज़ारात से मुल्हि़क़ा मसाजिद में आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िले सफ़र करवाना और बिल ख़ुसूस उ़र्स के दिनों में मज़ार शरीफ़ के इह़ाते में सुन्नतों भरे मदनी ह़ल्क़े लगाना, जिन में वुज़ू, ग़ुस्ल, तयम्मुम, नमाज़ और ईसाले सवाब का त़रीक़ा, मज़ारात पर ह़ाज़िरी के आदाब और सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतें सिखाई जाती हैं नीज़ दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और मदनी इन्आ़मात पर अ़मल की तरग़ीब भी दिलाई जाती है, अय्यामे उ़र्स में साहि़बे मज़ार की ख़िदमत में ढेरों ढेर ईसाले सवाब के तह़ाइफ़ पेश करना, नीज़ साहि़बे मज़ार बुज़ुर्ग के सज्जादा नशीन, ख़ुलफ़ा और मज़ारात के मुतवल्ली साहि़बान से वक़्तन फ़ वक़्तन मुलाक़ात कर के इन्हें दा'वते इस्लामी की ख़िदमात, जामिआ़तुल मदीना व मदारिसुल मदीना और मुल्क व बैरुने मुल्क में होने वाले मदनी कामों से आगाह करना वग़ैरा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी को दिन दुगनी और रात चौगुनी तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बारह (12) मदनी कामों में हि़स्सा लीजिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम औलियाउल्लाह के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे जि़न्दगी गुज़ारना चाहते हैं तो तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाएं । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह वोह मदनी माह़ोल है जिस ने बुज़ुर्गाने दीन के त़रीके़ पर चलते हुवे तमाम मुसलमानों को अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश का ज़ेह्न दिया और नेकी के कामों में तरक़्क़ी के लिये ज़ैली ह़ल्के़ के इन 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर हि़स्सा लेने की तरग़ीब भी दिलाई है । ज़ैली ह़ल्के़ के इन 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम नमाज़े फ़ज्र के बा'द मदनी ह़ल्क़ा भी है । जिस में रोज़ाना, तीन आयाते कुरआनी की तिलावत मअ़ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान व तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान/तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान/ तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत (4 सफ़ह़ात) और शजरए क़ादिरिय्या, रज़विय्या, ज़ियाइय्या, अ़त्तारिय्या पढ़ा जाता है । कुरआने मजीद पढ़ने पढ़ाने और समझने समझाने की तो क्या बात है !

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : خَیْرُکُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْاٰنَ وَعَلَّمَہٗ या'नी तुम में बेहतरीन शख़्स वोह है जिस ने कुरआन सीखा और दूसरों को सिखाया ।

(بخاری، کتاب فضائل القرآن، باب خیر کم من تعلم...الخ، ۳/۴۱۰، حدیث:۵۰۲۷)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने कुरआने पाक सीखा और सिखाया और जो कुछ कुरआने पाक में है, इस पर अ़मल किया, कुरआन शरीफ़ उस की शफ़ाअ़त करेगा और जन्नत में ले जाएगा । (تاریخ ابن عساکر، ۴۱/۳، معجم کبیر، ۱۰/۱۹۸ حدیث:۱۰۴۵۰)

एक और ह़दीसे पाक में है : जिस शख़्स ने कुरआने मजीद की एक आयत या दीन की कोई सुन्नत सिखाई क़ियामत के दिन

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये ऐसा सवाब तय्यार फ़रमाएगा कि इस से बेहतर सवाब किसी के लिये भी नहीं होगा। (جمع الجوامع، ۷/۲۸۱، حدیث:۲۲۳۵۳)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी का मदनी माहोल हमें औलियाउल्लाह से महब्बत, ज़िक्रो दुरूद की आदत, नेकियों की तरफ़ रग़बत और गुनाहों से नफ़रत का ज़ेहन देता है। इस मदनी माहोल की बरकत से बहुत से इस्लामी भाई गुनाहों भरी ज़िन्दगी छोड़ कर सुन्नतों के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने वाले बन रहे हैं। आइये एक मदनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं।

सुन्नतों की बहार

एक इस्लामी भाई अपनी दास्ताने इशरत के ख़ातिमे के अहवाल कुछ यूं बयान करते हैं कि दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माहोल से वाबस्ता होने से क़ब्ल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी वाले कामों में अय्यामे ज़ीस्त (ज़िन्दगी के दिन) बरबाद कर रहा था। फ़िल्में डिरामे देखने और गाने बाजे सुनने का बहुत शौक़ीन था। अगर कभी सफ़र पर जाना होता तो ऐसी बस में बैठना पसन्द करता जिस में फ़िल्में और गाने बाजे चलते हों, मेरी ज़िन्दगी में सुन्नतों की बहार यूं नुमूदार हुई कि एक दिन इशा की नमाज़ पढ़ने मस्जिद में जाना हुवा। नमाज़ के बाद एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने बड़े दिल नशीन अन्दाज़ में दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत देना शुरूअ़ किया, मैं भी क़रीब जा कर बैठ गया और बग़ौर दर्स सुनने लगा, फ़ैज़ाने सुन्नत के आ़म फ़हम अल्फ़ाज़ सुन कर इस क़दर मुतअस्सिर हुवा कि बा क़ाइदगी से दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत सुनना मेरा मा'मूल बन गया। रबीउ़ल अव्वल के मुबारक महीने में इस्लामी भाइयों के तरग़ीब दिलाने पर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का '**मदनी मुज़ाकरा**' मदनी चैनल पर देखने व सुनने का मौक़अ़ मिला। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल सुन कर ईमान ताज़ा हो गया, क़ब्रो ह़श्र की तय्यारी की फ़िक्र ज़ेहन में गर्दिश करने लगी, लिहाज़ा मैं ने ज़िन्दगी की बक़िया सांसों को

ग़नीमत जानते हुवे दा'वते इस्लामी का सुन्नतों भरा मुश्क बार मदनी माहोल अपना लिया और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़ता कर्दा मदनी मक़्सद **'मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है'** के तह़्त नेकी की दा'वत की धूमें मचाने में मश्ग़ूल हो गया । ता दमे तह़रीर जै़ली सत़्ह़ पर मदनी क़ाफ़िला ज़िम्मेदार की सआ़दत मिली हुई है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं । ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۹۷، حدیث: ۱۷۵)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये बानिये दावते इस्लामी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के रिसाले **'163 मदनी फूल'** से लिबास के चन्द मदनी फूल सुनते हैं।

फ़रमाने मुस्त़फा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : ۞ जिन्न की आंखों और लोगों के सित्र के दरमियान पर्दा येह है कि जब कोई कपड़े उतारे तो **बिस्मिल्लाह** कह ले । (معجم الاوسط، ۲/۵۹، حدیث: ۲۵۰۴) **मुफ़स्सीरे शहीर ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नइमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : जैसे दीवार और पर्दे लोगों की निगाह के लिये आड़ बनते हैं ऐसे ही येह, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र जिन्नात की निगाहों से आड़ बनेगा कि जिन्नात इस को देख न सकेंगे । (मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 268) ۞ जो बा वुजूदे कुदरत ज़ैबो ज़ीनत का लिबास पहनना तवाज़ोअ़ (या'नी

आ़जिज़ी) के तौ़र पर छोड़ दे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को करामत का हुल्ला पहनाएगा । (ابوداود، کتاب الادب، باب من کظم غیظا، ۴/۳۲۶،حدیث:۴۷۷۸) ۞ लिबास ह़लाल कमाई से हो और जो लिबास ह़राम कमाई से ह़ासिल हुवा हो, उस में फ़र्ज़ व नफ़्ल कोई नमाज़ क़बूल नहीं होती (کشف الالتباس فی استحباب اللباس،ص۳۶) ۞ (लिबास) पहनते वक़्त सीधी त़रफ़ से शुरूअ़ कीजिये (कि सुन्नत है) मसलन जब कुर्ता पहनें तो पहले सीधी आस्तीन में सीधा हाथ दाख़िल कीजिये फिर उल्टा हाथ उल्टी आस्तीन में (کشف الالتباس فی استحباب اللباس،ص۴۳) ۞ इसी त़रह़ पाजामा पहनने में पहले सीधे पाइंचे में सीधा पाउं दाख़िल कीजिये और जब (कुर्ता या पाजामा) उतारने लगें तो इस के बर अ़क्स (उलट) कीजिये या'नी उल्टी त़रफ़ से शुरूअ़ कीजिये ۞ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, '**बहारे शरीअ़त**' जिल्द 3, सफ़ह़ा 409 पर है : सुन्नत येह है कि दामन की लम्बाई आधी पिंडली तक हो और आस्तीन की लम्बाई ज़ियादा से ज़ियादा उंगलियों के पोरों तक और चौड़ाई एक बालिश्त हो (رد المحتار،۹/۵۷۹) ۞ सुन्नत येह है कि मर्द का तहबन्द या पाजामा टख़्ने से ऊपर रहे (मिरआतुल मनाजीह, जि. 6, स. 94) ۞ मर्द मर्दाना और औ़रत ज़नाना ही लिबास पहने । छोटे बच्चों और बच्चियों में भी इस बात का लिह़ाज़ रखिये ।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब, '**बहारे शरीअ़त**' हिस्सा 16 (304 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब '**सुन्नतें और आदाब**' हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तर्बिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

मुझ को जज़्बा दे सफ़र करता रहूं परवर दगार
सुन्नतों की तर्बिय्यत के क़ाफ़िले में बार बार

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक

(1) शबे जुमुअ़ा का दुरूद :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِى الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुअ़ा (जुमुअ़ा और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं। (اَفْضَلُ الصَّلَوٰات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص ١٥١ ملخصًا)

(2) तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।

(اَيضاً ص ٦٥)

(3) रह़मत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص ٢٧٧)

(4) एक हज़ार दिन की नेकियां :

جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक को पढ़ने वाले के लिये सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं। (مَجْمَعُ الزَّوَائِد)

(5) छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِيْ عِلْمِ اللّٰهِ صَلَاةً دَائِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰهِ

हज़रते अह़मद सावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब ह़ासिल होता है।

(اَفْضَلُ الصَّلَوَات عَلٰى سَيِّدِ السَّادَات)

(6) कुर्बे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दरमियान बिठा लिया। इस से सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तअ़ज्जुब हुवा कि येह कौन ज़ी मर्तबा है ! जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है।

(اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص ١٢٥)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

-: मिन जानिब :-

MAJLISE TARAJIM, BARODA (DAWATE ISLAMI)

Translation.baroda@dawateislami.net (+ 91 9327776311)